पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 (1) इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

महर्षि दयानन्द के बलिदान दिवस पर
एक शाम दयानन्द के नाम

भव्य संगीत संध्या

गुरूवार, 15 नवम्बर 2012
सायं 4:00 से 8:00 बजे तक
दिल्ली हाट, पीतमपुरा, दिल्ली
गायक कलाकार:
दिनेश पथिक, नरेन्द्र सुमन, आकाश आर्य

वर्ष-29 अंक-9 आश्विन-2069 दयानन्दाब्द 189 1 अक्टूबर से 15 अक्टूबर 2012 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
E-mail : aryayouth@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

चलो कुलाची आओ कुलाची पहुंचो कुलाची

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य प्रतिनिधि महासम्मेलन 20, 21 अक्तुबर को दिल्ली में होगा

समाज में आमूल-चूल परिवर्तन करेगा आर्य समाज -स्वामी आर्य वेश का आह्वान

दिल्ली, गाजियाबाद, फरीदाबाद, पलवल, मथुरा, आगरा, हिसार, हैदराबाद, देहरादून, बिजनौर में बैठकें सम्पन्न

रविवार 23 सितम्बर 2012, आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक सभा के मुख्यालय दयानन्द भवन, आसफ अली रोड, नई दिल्ली में आयोजित बैठक में उत्साहित कार्यकर्त्ता स्वामी आर्यवेश जी, श्री सत्यव्रत सामवेदी व डॉ. अनिल आर्य के साथ। द्वितीय चित्र में दयानन्द भवन के सभागार का सुन्दर दृश्य।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आगामी 20, 21 अक्टूबर 2012 को कुलाची हंसराज मॉडल स्कूल, अशोक विहार, दिल्ली में होने वाले अर्न्तराष्ट्रीय आर्य प्रतिनिधि महासम्मेलन की तैयारी के लिए दयानन्द भवन, आसफ अली रोड, नई दिल्ली में एक विशाल आर्य कार्यकर्त्ता बैठक का आयोजन किया गया जिसमें सम्मेलन को सफल बनाने के लिए सभी ने संकल्प लिया। सम्मेलन में विश्व भर से आर्य समाज के चुने हुए वैदिक विद्वान,संन्यासी, भारत की 25 प्रान्तीय सभाओं के पदाधिकारी एकत्र होकर आर्य समाज के भावी कार्यक्रम पर गहन चिन्तन करेंगे। यह सम्मेलन आर्य समाज के इतिहास में ऐतिहासिक भूमिका निभायेगा, जिसके द्वारा आर्य समाज का प्रत्येक कार्यकर्ता आम जन की समस्याओं को लेकर उसे जनआन्दोलन का रूप देगा।

गाजियाबाद में रविवार, 16 सितम्बर 2012 को जनपद् के आर्य समाज के कार्यकर्ताओं की विशाल बैठक आर्य समाज,नया आर्य नगर,मेरठ रोड़ में आर्य उप-प्रतिनिधि सभा गाजियाबाद के प्रधान श्री मायाप्रकाश त्यागी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के अन्तर्राष्ट्रीय संयोजक स्वामी आर्य वेश ने कहा कि वर्तमान सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था सभी समस्याओं की जड़ है। आर्य समाज विश्व की समस्याओं पर्यावरण,मंहगाई,आंतकवाद,भ्रष्टाचार,पाखण्ड-अन्धविश्वास के उन्मूलन के लिए जनआन्दोलन चलायेगा।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कहा कि आज समाज में नैतिक पतन,चारित्रिक गिरावट आयी है युवा पीढ़ी को सही मार्गदर्शन की आवश्यकता है जिसे आर्य समाज पूरा करेगा,सामाजिक विसंगतियां,जन्मना जाति प्रथा, नारी उत्पीड़न जैसी समस्याओं के लिए आर्य समाज जनजागरण करेगा। आर्य नेता मायाप्रकाश त्यागी ने कहा कि आर्य समाज एक सामाजिक आन्दोलन है जो अपने सामाजिक दायित्व को पूर्ण करने के लिए आज भी पूरी तरहां कृत संकल्प है ।

परिषद् के प्रान्तीय महामन्त्री प्रवीन आर्य ने बताया कि गाजियाबाद से सैंकडों चुने हुए प्रतिनिधि सम्मेलन में भाग लेंगे । श्री आर्य ने केन्द्र सरकार द्वारा डीजल के दामों में बढोतरी व रसोई गैस में सब्सीडी खत्म करने की कड़ी निंदा की है। सरकार का एफ0डी0आई के माध्यम से भारत में विदेशी कम्पनियों को लाना भारत के हितों पर कुठारा घात है।

प्रान्तीय प्रभारी डा.वीरपाल विद्यालंकार, महेन्द्र भाई, राम कुमार सिंह आर्य, डा.आर.के.आर्य, प्रमोद चौधरी, सुरेश आर्य, राहुल आर्य, हर्ष बवेजा, सुरेश गुप्ता, सौरभ गुप्ता, रामनिवास शास्त्री, राजेश्वर शास्त्री, तेजपाल आर्य आदि उपस्थित थे।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य प्रतिनिधि सम्मेलन के लिए एक लाख रूपये का चैक स्वामी आर्यवेश व श्री सत्यव्रत सामवेदी को भेंट करते श्री माया प्रकाश त्यागी व साथ में डा. अनिल आर्य, श्री राम निवास, श्री जय नारायण अरूण, श्री प्रेमपाल शास्त्री, श्री विट्ठल राव आर्य। द्वितीय चित्र में पूर्व महापौर श्रीमती शकुन्तला आर्या की पुस्तक का विमोचन करवाते हुए। इस अवसर पर श्रीमती शकुन्तला ने 51 हजार रूपये दान देने की घोषणा की।

'मैं और मेरा देश'

-मनमोहन कुमार आर्य

मैं अपने शरीर में रहने वाला एक चेतन तत्व हूं। आध्यात्मिक जगत् में इसे जीवात्मा कह कर पुकारा जाता है। मैं अजन्मा, अविनाशी, नित्य, जन्म-मृत्यु के चक्र में फंसा हुआ तथा इससे मुक्ति हेतु प्रयत्नशील, चेतन, स्वल्प परिमाश वाला, अल्पज्ञानी एवं ससीम, आनन्दरहित, सुख-आनन्द का अभिलाषी तत्व हूं। मेरा जन्म माता-पिता से हुआ है। मेरे माता-पिता व इस संसार को, जिसमें मुझे भेजा गया है, पहले से ही रचा व बनाया गया है। पहले सृष्टि की रचना किसी ने की, उसके पश्चात मनुष्योत्पत्ति का क्रम आरम्भ किया। विगत 1,96,08,53,112 वर्षो से यह क्रम अनवरत जारी है। मेरे माता-पिता व इस सृष्टि को बनाने वाला कौन है? इसका उत्तर शास्त्रों के अध्ययन व चिन्तन-मनन व विवेक से मिलता है कि कोई सत्य, चेतन, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, निराकार, कारश प्रकृति का स्वामी व नियंत्रक, नित्य, अनुपत्न्न, अविनाशी, सर्व-अन्तर्यामी, सूक्ष्मातिसूक्ष्म तत्व है जिसे हम ईश्वर, परमात्मा, भगवान, सृष्टिकर्ता, गाड, खुदा, अल्लाह, रब, मालिक आदि नामों से जानते हैं तथा वह केवल और केवल 'एक' है। सृष्टि के आरम्भ से अब तक इस जगत में अनेक श्रेष्ठ पुरूषों ने जन्म लिया हैं जिनका यश व कीर्ति आज तक विद्यमान है। यह सभी सत्याचारी, अन्याय से पीड़ित लोगों की रक्षा करने वाले, त्यागी, तपस्वी, ईश्वरभक्त, वेदभक्त एवं वेदानुयायी, माता-पिता व आचार्यो के प्रति सेवा व भक्ति-भावना रखने वाले थे। इनमें से कुछ ज्ञात महापुरूष मनु, राम, कृष्ण, चाशक्य, दयानन्द, सरदार पटेल, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, राम प्रसाद बिस्मिल, चन्द्र शेखर आजाद, बन्दा बैरागी भगत सिंह, अशफाक उल्ला खां आदि हुए हैं। हमें महापुरूषों के जीवन से प्रेरणा लेकर उनके गुणों को धारण करना है यही उन महापुरूषों की पूजा है एवं स्तुति-प्रार्थना-उपासना-ध्यान आदि केवल ईश्वर का ही करना है और यही ईश्वर की पूजा है।

वेदादि शास्त्रों का अध्ययन करने एवं ऋषि-मुनियों के साहित्य का अध्ययन करने पर हमने पाया कि हमारा जन्म भोग व अपवर्ग के लिए हुआ है। भोग का अर्थ है कि हमने अपने पूर्व जन्मों में जो अच्छे-बुरे कर्म किये थे उनमें जिनका भोग अभी तक हमें प्राप्त नहीं हुआ है वह हमारा प्रारब्ध है। उसे हमें इस जन्म व अगले जन्मों में भोगना है। इन कर्मो के फलों को भोगने के साथ ईश्वर ने हमें एक सुविधा यह भी दी है कि यदि हम स्वाध्याय से अपने ज्ञान को बढ़ा कर एवं स्तुति-प्रार्थनोंपासना से ध्यान व समाधि को सिद्ध कर ईश्वर का साक्षात्कार कर लेते हैं तो इस जन्म अथवा आगामी कुछ जन्मों में भोगों के समाप्त व कम हो जाने पर हमारी मुक्ति हो जायेगी। मुक्ति की अवधि एक परान्तकाल अर्थात् 31,10,40,00,00,00,000 वर्षो की होती है। उसके बाद हमारा पुनः जन्म होगा। इस मुक्ति की अवधि में हमें किंचित भी दुःख की अवस्था से नहीं गुजरना पड़ेगा। यह उपलब्धि हमारे शास्त्राध्ययन एवं उसके अनुसार जीवन-यापन व योग साधना से प्राप्त होती है। यहां यह भी लिखना उचित होगा कि सृष्टि के आरम्भ से महाभारत काल तक और यहां से मध्य काल में बौद्ध मत के आरम्भ तक सारे विश्व में केवल वैदिक धर्म व संस्कृति का ही प्रचार-प्रसार-पालन व धारश सर्वत्र रहा है। महाभारत काल के पश्चात अज्ञानतावश बौद्ध, जैन, पौराशिक व अन्य दूरस्थ देशों में ऐसे ही भिन्न भिन्न मतों का प्रादूर्भाव हुआ। यदि सभी मतों के व्यक्ति मिल कर परस्पर मित्रता व निष्पक्षता से विचार-विमर्श कर मनुष्य धर्म का निर्धारश करें तो निश्चित रूप से वैदिक धर्म व मत को ही सर्वसम्मति से स्वीकार करना होगा और तब वेदेतर मत के लोगों को जीवन में ईश्वरीय आनन्द की उपलब्धि एवं उसके पश्चात मुक्ति प्राप्त हो सकेगी।

मेरा जन्म आज से लगभग 60 वर्ष पूर्व भारत में हुआ। तब से मैं यहां रह रहा हूं। शैशव अवस्था ने माता पिता ने धर्म व रीति रिवाज सम्बन्धी जो बाते बताई व समझाई उसी रूप में मैंने उनको स्वीकार कर लिया और मानता रहा। विद्यालय की शिक्षा के समय एक पड़ोसी आर्य समाजी मित्र मिल गये, 18 वर्ष की आयु में उनके साथ सायंकाल को भ्रमण की आदत पड़ गई। यदा-कदा वह यत्र-पत्र हो रहे प्रवचनों में ले जाया करते थे और आर्य समाजी दृष्टिकोण से उनकी समालोचना करते थे। आरम्भ में पौराशिक संस्कारों के कारण मुझे वह प्रायः उचित नहीं लगती थी। यदा-कदा आर्य समाज भी जाना होता था और वहां यज्ञ, भजन व विद्वानों के विचारों को सुना और पुस्तकें क्रय करके मनमोहन कुमार आर्य स्वाध्याय किया। धीरे-धीरे पता नहीं कब आर्य समाज के वेद संबंधी विचारों ने मेरे मन व मस्तिष्क पर अधिकार कर लिया और पौराशिक अज्ञान-अन्धविश्वास व कुरीतियों से युक्त बातें मन से दूर चली गई है। मेरा अब दृण विश्वास है कि ईश्वर की सगुश व निगुर्श भक्ति के स्थान पर पौराशिक रीति से मैं जो मूर्ति पूजा व कर्मकाण्ड आदि करता था वह अनुचित था। आज मैं आत्मिक सन्तोष का अनुभव करता हूं। यह सब मुझे स्वाध्याय व विद्वानों के प्रवचनों तथा चिन्तन व मनन से प्राप्त हुआ है। आत्मा व मन इस बात से सन्तुष्ट हैं कि हमें इस संसार व ईश्वर के बारे में यथार्थ ज्ञान है।

जो ज्ञान व संस्कार अब हमारे हैं वह भारत के सभी लोगों व विश्व के लोगों के नहीं है। वहां इस प्रकार के विचारों का प्रचार प्रसार की कारगर व समुचित व्यवस्था भी नहीं है। यदि समुचित व्यवस्था होती तो मुझे लगता है कि विद्यार्थी काल में जिस प्रकार से मेरा बौद्धिक मतान्तर हुआ उसी प्रकार शायद संसार के सभी लोगों का हो सकता था। मुझे इन विचारों को मानने या अपनाने के लिए किसी ने जोर-जबरस्ती नहीं की अपितु यह स्वतः हुआ और तब हुआ जब मेरी आत्मा ने उसे स्वीकार किया। मुझे लगता है और यह वास्तविकता है कि संसार में वैदिक विचारों, सिद्धान्तों व मान्यताओं का प्रचार नगण्य है एवं दूसरे मतानुयायी योजनाबद्ध रूप से वेद एवं पौराशिक लोगों को मतान्तरित कर उन्हें स्वमत में दीक्षित कर इस देश की राजनैतिक सत्ता को हथिया कर अपना छद्म उद्देश्य पूरा करना चाहते हैं। इसके लिए वह अन्दर ही अन्दर सब प्रकार के कुत्सित कार्य कर रहे हैं परन्तु बाहर से स्वयं को बहुत ही अच्छा व मानवता का सेवक दिखाते हैं।

मुझे लगता है कि मेरा कर्तव्य है कि ईश्वर से प्राप्त वेद एवं वैदिक ज्ञान कहीं विलुप्त न हो जाये। इसके लिए हमें हर सम्भव प्रयास करना है और उसकी रक्षा करनी है। अपनों को मनाना है व उन्हें इस विश्ववारा संस्कृति के महत्व को हृदयगंम कराना है। हमें विश्व के अन्य मतावलम्बी बन्धुओं को भी आमन्त्रित करना है कि वह भी ईश्वर, जीवात्मा के स्वरूप पर हमसे प्रेमपूर्वक संवाद व चर्चा करें। यदि उन्हें हमारे विचारों में कहीं कोई कमी दृष्टिगोचर होती है तो वह हमें बतायें, हम सदिच्छा से उसे समझ कर उसका समाधान व निराकरश करेगें। यह तभी सम्भव होगा जब हम स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, पं. गुरूदत्त विद्यार्थी, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी अमर स्वामी, पं.शान्तिप्रकाश, पं. गशपतिशर्मा जैसा स्वयं को बनायें। इसके लिए हमें अपने गृहस्थ जीवन में भी और उसके पश्चात 50 या 60 वर्ष की आयु में गृहस्थ व व्यवसाय से सेवानिवृत्त होकर घर में रहते हुए या वानप्रस्थी की भांति इस कार्य में जुटना पड़ेगा। गृहस्थ व सेवाकाल व व्यवसाय के काल में भी इस कार्य को यथाशक्ति करना होगा तभी सेवानिवृत्ति के पश्चात यह काम कर सकेगें। यदि इसकी उपेक्षा करेगें तो वह दिन दोबारा आ सकता है जब बौद्धों के प्रचार की भांति हमारे सभी बन्धु भिन्न-2 मतों के अनुयायी बन जायेगें और उन मतों के लोग हमारी वैदिक धर्म व संस्कृति को नेस्तनाबूद कर देगें। ऐसा पहले भी करने के प्रयास हुए हैं, वह आंशिक सफल भी रहे हैं, जिससे हमें अपूर्व हानि हुई है अन्यथा आज का इतिहास कुछ और ही होता। इस बात की कोई गारण्टी नहीं है और न हो सकती है, कि ऐसा कभी नहीं होगा, अतः सावधान होकर अपने कर्तव्य का पालन जैसा कि हमारे पूर्व पुरूषों ने किया है, हमें भी करना है।

हमने इस लेख के शीर्षक में मैं और मेरा देश शब्दों का प्रयोग किया है। मैं से हमारा तात्पर्य वैदिक संस्कारों से युक्त मैं व मेरे देशवासी व विश्व-वासियों से हैं जो सत्य, यथार्थ, सृष्टिक्रम के अनुरूप सि)ान्तों व मान्यताओं को माने। जब हमारे देश के सभी या अधिकांश लोग वैदिक मतानुयायी हो जायेगें तब यह देश विश्व शान्ति का धाम बन जायेगा। इसके लिए हमें सत्य, प्रेम, सहयोग, परोपकार, सेवा, शिक्षा, प्रचार का प्रयोग करना है। ईश्वर की शक्ति व प्रेरशा हमारे साथ है अतः हमें चिन्ता नहीं करनी है। हमारी आत्मा अमर है, यह हमारा दृण विश्वास है अतः भय का काई स्थान नहीं। सत्य व धर्म की रक्षा व प्रचार के मार्ग में चलकर यदि कुछ अप्रिय भी होता है तो ईश्वर से हमें उसकी क्षतिपूर्ति ही नहीं होगी अपितु असीम सुख व आनन्द की उपलब्धि होगी। अतः आर्य समाज के सभी लोगों को अपने मतभेद भुलाकर विचार मन्थन कर वह योजना बनानी होगी जिससे हम देश के सभी मतों के विद्वानों को अपना सत्य-सन्देश देकर उन्हें आलोचना का अवसर दें और निवेदन करें कि यदि वह आलोचना नहीं कर रहे हैं और उन्हें हमारी मान्यतायें सत्य लगती हैं तो उसे वह स्वीकार कर हमारे साथ मिलकर कार्य करें। ऐसा होने पर ही देश से भ्रष्टाचार, लूट, स्वार्थ का कारोबार, सामाजिक बुराईयां, आतंकवाद, अनाचार व दुराचार आदि समाप्त होगा। सामाजिक अन्याय दूर होगा, जातिवाद, ऊंच-नीच की भावना समाप्त होगी, शोषण व अन्याय समाप्त होगा और हमारा देश ऐसा होगा जिससे न केवल हम ही प्रसन्न व सन्तुष्ट होगें अपितु समस्त देश वासी सुःख से अपना जीवन व्यतीत कर सकेगें। **आईये, इस विषय पर चिन्तन करते हैं और जिससे जो बन सकता है उसके लिए अपने जीवन से समय निकाल कर व अपनी सामर्थ्य के अनुसार धन का दान कर अपना कर्तव्य निभायें। हम सत्य पर हैं अतः ईश्वर हमारे साथ है, साथ रहेगा, साथ देगा, इसकी आशंका नहीं होनी चाहिये।**

पताः 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, दूरभाषः 09412985121

आगरा में विशाल आर्य कार्यकर्त्ता बैठक सौल्लास सम्पन्न

मंगलवार 25 सितम्बर 2012 आर्य समाज राजा मण्डी आगरा में आयोजित विशाल बैठक को सम्बोधित करते स्वामी आर्यवेश जी साथ में संयोजक श्री रमाकान्त सारस्वत, स्वामी सोम्यानन्द जी, श्री सुशील विद्यार्थी, स्वामी विश्वानन्द जी, डॉ. अनिल आर्य, महापौर श्री इन्द्रजीत आर्य व डॉ. विद्यासागर जी।

गाजियाबाद व मथुरा में कार्यकर्त्ता बैठक उत्साहपूर्वक सम्पन्न

रविवार 16 सितम्बर 2012 को आर्य समाज नया आर्य नगर, गाजियाबाद में आयोजित विशाल आर्य कार्यकर्त्ता बैठक को सम्बोधित करते डॉ. अनिल आर्य साथ में श्री महेन्द्र भाई, डा. आर. के. आर्य, स्वामी आर्यवेश जी, श्री मायाप्रकाश त्यागी, श्री प्रवीण आर्य व डा. वीरपाल विद्यालंकार। द्वितीय चित्र में मंगलवार 25 सितम्बर 2012 को आर्य समाज कृष्णा कॉलोनी मथुरा में आयोजित बैठक में स्वामी आर्यवेश जी, डॉ. अनिल, स्वामी विश्वानन्द जी व जिला मन्त्री श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य आदि।

फरीदाबाद में आर्य महासम्मेलन को लेकर अत्यन्त उत्साह की लहर

शनिवार 22 सितम्बर 2012 जिला फरीदाबाद की कार्यकर्त्ता बैठक आर्य कन्या सदन सैक्टर-15 फरीदाबाद में उत्साहपूर्वक वातावरण में श्री पी. के. मित्तल, एडवोकेट की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। चित्र में श्री नरेन्द्र आहुजा विवेक की सीडी का लोकार्पण करते बायें से श्री लक्ष्मी चन्द आर्य, श्री सत्यव्रत सामवेदी, स्वामी आर्यवेश जी, श्री सूर्यदेव त्यागी, डॉ. अनिल आर्य, व श्री पी. के. मित्तल। बैठक का संचालन श्री सत्यभूषण आर्य ने किया। इस अवसर पर श्रीमती विमला ग्रोवर (प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा, फरीदाबाद), श्री जितेन्द्र सिंह आर्य, श्री विजय भूषण आर्य, श्री नन्द लाल कालरा, श्री ओम प्रकाश सेठी, श्री गजराज आर्य, डॉ. सत्यदेव गुप्ता, श्री सत्यप्रकाश भारद्वाज, श्री सुधीर कपूर, श्री कुलभूषण आर्य, श्री सुभाष आर्य, श्री सुभाष भगत, श्री ओम प्रकाश शर्मा एडवोकेट, श्री महेन्द्र बोहरा, श्री सत्यपाल शास्त्री, श्री मकेन्द्र कुमार, लाला मेघराज आर्य, श्री ओम प्रकाश सेठी, श्री बीरेन्द्र योगाचार्य, श्री रंजन आनन्द, श्री ए.के. रस्तोगी, श्री देवेन्द्र यादव, श्री अशोक मंगला आदि अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

पलवल से पूरे जोश के साथ पहुंचेगें दिल्ली आर्य महासम्मेलन में

मंगलवार 25 सितम्बर 2012 आर्य सामज जवाहर नगर, पलवल में आयोजित बैठक में स्वामी आर्यवेश जी, डॉ. अनिल आर्य, स्वामी सौम्यानन्द जी। दाएं चित्र में उपस्थित जनसमूह। बैठक का कुशल संचालन प्रो. जयप्रकाश आर्य ने किया तथा श्री वी. के. आर्य, श्री नारायण सिंह आर्य, श्री संजीव मंगला, श्री सतीश आर्य आदि प्रभुद्ध जनों ने आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए तन-मन-धन से सहयोग देने का आश्वासन दिया। युवा सन्यासी श्रद्धानन्द सरस्वती ने सूचित किया कि पलवल जिला हर संभव सहयोग देने के लिए आगे रहेगा।

समस्त दान राशिः- ''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'' के नाम से दयानन्द भवन, 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर भिजवाने की कृपा करें। सभा को दिया गया दान 80जी के अर्न्तगत आयकर मुक्त है।

दिल्ली चलो- आर्यो दिल्ली चलो- आर्यो दिल्ली चलो- आर्यो

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य प्रतिनिधि महा सम्मेलन

दिनांक 20-21 अक्टूबर 2012

स्थान: कुलाची हंसराज मॉडल स्कूल, अशोक विहार-3, दिल्ली (निकट मैट्रो स्टेशन कन्हैया नगर)

दिल्ली से बाहर के आने वाले आर्य बंधु आवास व्यवस्था हेतु शीघ्र सूचित करें

श्री पूनम सूरी (प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा) सम्मेलन का उद्घाटन करेंगे व डॉ. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई यज्ञ के ब्रह्मा होगें।

दर्शनाभिलाषी:

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती प्रधान 09418012871	**स्वामी आर्य वेश** संयोजक 09013783101	**मिठाई लाल सिंह** संरक्षक 09892117977	**पं. मायाप्रकाश त्यागी** स्वागताध्यक्ष 09873540508	**डॉ. अनिल आर्य** संयुक्त संयोजक 09810117464
सत्यव्रत सामवेदी संयुक्त संयोजक 09829052697	**सुदर्शन शर्मा** संयुक्त संयोजक	**प्रो. विट्ठलराव आर्य** संयुक्त संयोजक 09849560691	**वैद्य इन्द्रदेव** स्वागत मन्त्री	**पम्मी दत्ता** प्रधानाचार्या कुं. हंसराज मॉडल स्कूल

करनाल में रक्तदान शिविर व परिवर्तन ने मनाया हिन्दी महाकुम्भ

दिनांक 14 सितम्बर 2012 को केन्द्रीय आर्य युवक परिषद करनाल द्वारा हिन्दी दिवस के अवसर पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री जगमोहन आनन्द का अभिनन्दन करते श्री स्वतन्त्र कुकरेजा, श्री अजय आर्य, श्री ओमप्रकाश कुमार, श्री हरेन्द्र चौधरी, श्री रोशन आर्य आदि। द्वितीय चित्र में परिवर्तन संस्था के तत्वावधान में आयोजित हिन्दी महाकुम्भ में सम्बोधित करते श्री देशपाल सिंह राठौड़ साथ में श्री विजय गुप्त, पूर्व महापौर डॉ. महेश शर्मा, पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त डॉ. जी. वी. जी. कृष्णामूर्ति, श्री सत्यप्रकाश त्यागी आदि।

विशाल आर्य कार्यकर्त्ता बैठक रविवार 7 अक्टूबर को

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में एक विशाल आर्य कार्यकर्त्ता बैठक रविवार, 7 अक्टूबर 2012 को दोपहर 3 बजे आर्य समाज, अशोक विहार, फेज-1, ब्लॉक-एफ, दिल्ली-52 निकट मेट्रो स्टेशन केशव पुरम में होगी। सभी आर्य युवक व आर्य बन्धु समय पर पहुंचे। **निवेदक-**

डॉ. अनिल आर्य-अध्यक्ष **महेन्द्र भाई-महामन्त्री।**

आनन्दधाम हरिद्वार में योग साधना शिविर

आचार्य अखिलेश्वर जी महाराज के सानिध्य में बुधवार 10 अक्टूबर से रविवार 14 अक्टूबर 2012 तक योग साधना शिविर वैदिक योग आश्रम आनन्दधाम, हरिपुरकला, हरिद्वार में आयोजित किया जा रहा है।

सम्पर्क- सुवर्णा भारद्वाज- 09313989311

शोक: श्री सुरेन्द्र शास्त्री को मातृ शोक

1. आर्य समाज मंगोलपुरी, दिल्ली के सहमन्त्री श्री सुरेन्द्र शास्त्री की पूज्य माता श्री महादेवी जी का गत दिनों निधन हो गया। आर्य जगत् की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।
2. राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के पूर्व सर-संघचालक श्री के.पी.एस. सुदर्शन जी का गत दिनों निधन हो गया।
3. आर्य समाज राजेन्द्र नगर, दिल्ली के श्री राधाशरण अग्रवाल का 29 सितम्बर 2012 को निधन हो गया।
4. बागपत के आर्य युवक श्री जितेन्द्र ढाका का गत दिनों निधन हो गया।
5. आर्य समाज अशोक विहार-1, दिल्ली के प्रधान श्री के.बी. गुप्ता के युवा सुपुत्र का गत दिनों निधन हो गया। **दिवंगतों की निधन पर विनम्र श्रद्धांजलि।**

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में

251 कुण्डीय विराट यज्ञ
अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक 25, 26, 27 जनवरी 2013, स्थान रामलीला मैदान, अशोक विहार, दिल्ली-52

सभी आर्य जन उपरोक्त तिथियां नोट कर लें व दल बल सहित पहुंचने का कार्यक्रम बनायें

श्री विभोर त्यागी के जन्मोत्सव पर अथर्ववेद यज्ञ

दिनांक 14 अगस्त से 16 अगस्त 2012 तक श्री विभोर त्यागी के जन्मोत्सव पर (पौत्र श्री मायाप्रकाश त्यागी) के निवास पर गाजियाबाद में अथर्ववेद पारायण यज्ञ डॉ. महावीर जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। श्री प्रवीण त्यागी व श्रीमती सुमन त्यागी मुख्य यज्ञमान बने। अनेकों प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने पधार कर अपनी शुभकामनाएं प्रदान की।

दयानन्द मठ चम्बा में शारद यज्ञ

स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती के सानिध्य में दिनांक 12 अक्टूबर से 17 अक्टूबर 2012 तक दुर्लभ शारद यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। सभी आर्यजन सादर आमन्त्रित है।

- आचार्य महावीर सिंह

आर्य समाज बी-ब्लॉक जनकपुरी में श्रावणी पर्व

आर्य समाज बी-ब्लॉक जनकपुरी दिल्ली में दिनांक 23 अगस्त से 26 अगस्त तक श्रावणी पर्व मनाया गया। डॉ. महेश विद्यालंकार के प्रवचन हुए। साध्वी उत्तमायति के मधुर भजनों का आनन्द लिया। स्वामी देवव्रत सरस्वती, आ. योगेन्द्र शास्त्री, आचार्य देवशर्मा, श्री हीरालाल चावला, श्री के.एल. गुप्ता आदि ने उद्बोधन दिया। समाज के प्रधान डॉ. सुन्दर लाल कथुरिया ने सभी का आभार व संचालन श्री केवल कृष्ण कपानिया ने किया।

श्री राम कृष्णा तनेजा पुन: प्रधान निर्वाचित

आर्य समाज, ग्रेटर कैलाश-1, दिल्ली के चुनाव में श्री राम कृष्णा तनेजा-प्रधान, श्री डी.एन. ग्रोवर-मन्त्री, श्री एम. एम. सेठ- कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए। तदर्थ बधाई

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मयंक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548504 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9910649696, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970